Re-Accredited 'B' 2.82 CGPA by NAAC
VEER NARMAD SOUTH GUJARAT UNIVERSITY
University Campus, Udhna-Magdalla Road, SURAT - 395 007, Gujarat, India.
વીર નર્મદ દક્ષિણ ગુજરાત યુનિવર્સિટી
યુનિવર્સિટી કેમ્પસ, ઉધના-મગદલ્લા રોડ, સુરત - ૩૯૫ ૦૦૭, ગુજરાત, ભારત.
Telegram : VNSGU, Telephone : +91 - 261 - 2227141 to 2227146, Fax : +91 - 261 - 2227312
E-mail : info@vnsgu.ac.in, Website : www.vnsgu.ac.in

–: પરિપત્ર :–

વિનયન વિદ્યાશાખા હેઠળની હિન્દી વિષયના અનુસ્નાતક અભ્યાસક્રમનું કેન્દ્ર ચલાવતી તમામ સંલગ્ન કોલેજોનાં આચાર્યશ્રીઓને જણાવવાનું કે, એમ.એ. સેમીસ્ટર–૧ થી સેમેસ્ટર–૪ ના હિન્દી વિષયના અભ્યાસક્રમ અંગે હિન્દી વિષયની અભ્યાસસમિતિએ તેની તા.૦૯–૦૯–૨૦૧૪ ની સભાના ઠરાવ ક્રમાંક : ૩ અન્વયે કરેલી નીચેની ભલામણ વિનયન વિદ્યાશાખાએ તેની તા. ૨૩–૦૧–૨૦૧૫ ની સભાના ઠરાવ ક્રમાંક : ૯ અન્વયે સ્વીકારેલ છે, જે એકેડેમિક કાઉન્સિલે તેની તા.૧૩/૦૨/૨૦૧૫ ની સભાના ઠરાવ ક્રમાંક : ૩૬ અન્વયે મંજૂર કરેલ હોય તેની જાણ સંબંધકર્તા શિક્ષકો અને વિદ્યાર્થીઓને કરવી, તદ્‌ઉપરાંત તેનો અમલ કરવો.

<u>હિન્દી વિષયની અભ્યાસસમિતિની તા.૦૯–૦૯–૨૦૧૪ ની સભાના ઠરાવ ક્રમાંક : ૩</u>

:: આથી ઠરાવવામાં આવે છે કે, શૈક્ષણિક વર્ષ ૨૦૧૫–૧૬ થી અમલમાં આવનાર એમ.એ. સેમીસ્ટર–૧ થી સેમેસ્ટર–૪ નો હિન્દી વિષયનો અભ્યાસક્રમ સ્વીકારવા વિનયન વિદ્યાશાખાને ભલામણ કરવામાં આવે છે.

<u>વિનયન વિદ્યાશાખાની તા. ૨૩–૦૧–૨૦૧૫ ની સભાની ભલામણ ક્રમાંક : ૯</u>

:: આથી ઠરાવવામાં આવે છે કે, હિન્દી વિષયની અભ્યાસસમિતિની તા.૦૯/૦૯/૨૦૧૪ ની સભાની ભલામણ ક્રમાંક : ૩ મુજબ રજૂ થયેલ અભ્યાસક્રમ સ્વીકારી તે મંજૂર કરવા એકેડેમિક કાઉન્સિલને ભલામણ કરવામાં આવે છે

<u>એકેડેમિક કાઉન્સિલની તા. ૧૩–૦૨–૨૦૧૫ ની સભાનો ઠરાવ ક્રમાંક : ૩૬</u>

:: આથી ઠરાવવામાં આવે છે કે, વિનયન વિદ્યાશાખાની તા. ૨૩–૦૧–૨૦૧૫ ની સભાની ભલામણ ક્રમાંક : ૯ નો સ્વીકાર કરી મંજૂર કરવામાં આવે છે.

બિડાણ : ઉપર મુજબ

ક્રમાંક : એકે./પરિપત્ર/૩૮૨૨/૧૫
તા. ૨૦–૦૩–૨૦૧૫

કુલસચિવ

પ્રતિ,

૧) હિન્દી વિષયના અનુસ્નાતક અભ્યાસક્રમનું કેન્દ્ર ચલાવતી તમામ સંલગ્ન કોલેજોનાં આચાર્યશ્રીઓ.
૨) પરીક્ષા નિયામકશ્રી, પરીક્ષા વિભાગ, વીર નર્મદ દ. ગુ. યુનિવર્સિટી, સુરત.

...તરફ જાણ તેમજ ઘટતી કાર્યવાહી સારૂ.

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्याल, सुरत
एम.ए. हिंदी
सेमेस्टर-1
(2015-2016, 2016-2017 एवम् 2017-2018 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र - 1 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य Core Course-01

प्रस्तावना: हिंदी का आदिकालीन साहित्य परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय व सक्षम भूमिका रही है। इस काल के अध्ययन के बिना किसी भी काल का वास्तविक मूल्यांकन संभव नहीं है। भक्तिकाल का काव्य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1. कबीर-वाणी पीयूष संपा.डॉ. जयदेव सिंह (प्रकाशक-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
2. जायसी- पद्मावत, संपा.डॉ.माता प्रसाद गुप्त (नागमती विरह तथा सिंहल द्वीप खण्ड) (साहित्य भवन प्रा.लि. जीरो रोड, इलाहाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. भक्तिकालः हिंदी साहित्य का सुवर्ण युग।
2. निर्गुण भक्ति-धारा की विशेषताएँ।

ईकाई-2 1. हिंदी सूफी काव्य परंपरा।
2. हिंदी सूफी काव्य परंपरा में जायसी का स्थान।

ईकाई-3 कबीर-वाणी पीयूष
1. कबीरः जीवन परिचय।
2. कबीर काव्य का सामाजिक और क्रांतिकारी पक्षः समग्र प्रयोजन।
3. कबीर का समन्वयवादी दृष्टिकाण।
4. कबीर का रहस्यवाद और प्रेमानुभूति।
5. कबीर-काव्य के विषय।
6. कबीर-काव्य के सैद्धांतिक और दार्शनिक आधार।
7. कबीर-काव्य का कलात्मक पक्ष।

ईकाई-4 पद्मावत
1. 'पद्मावत' में इतिहास और कल्पना।
2. 'पद्मावत': प्रबंधात्मकता, प्रेमाभिव्यंजना, रहस्यवाद, अन्योक्ति अथवा समासोक्ति और दार्शनिकता।
3. 'पद्मावत' में विरह-वर्णन, प्रकृति-चित्रण और काव्य-सौष्ठव।

अंक विभाजनः

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. कबीर-डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी (राजकमल प्रकाशन)
2. कबीर-संपा.विजयेन्द्र स्नातक
3. हिंदी साहित्य का आदिकाल-डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी
4. भारतीय प्रेमाख्यान काव्य-डॉ. हरिकांत श्रीवास्तव

5. महाकवि जायसी और उनका काव्य-डॉ.इकबाल अहमद
6. जायसी-एक नई दृष्टि-डॉ.रघुवंश (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
7. कबीरः एक नई दृष्टि-डॉ.रघुवंश (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
8. कबीर के आलोचक-डॉ.धर्मवीर (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
9. हिंदी के प्राचीन कवि-डॉ.द्वारिकाप्रसाद सक्सेना (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
10. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
11. जायसी ग्रंथावली-संपा.आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
12. कबीरदासः विविध आयाम-संपा. प्रभाकर श्रोत्रिय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
13. पद्मावत का अनुशीलन-इन्द्रचन्द्र नारंग (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र -2 भारतीय काव्यशास्त्र एवम् साहित्यालोचन Core Course-02

प्रस्तावना- किसी भी रचना की विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की परख हो सकती है। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद करने तथा रचना को उसकी समग्रता में समझने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 रस-सिद्धांत -रस का स्वरूप, रस-निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।
अलंकार -सिद्धांत-मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।

ईकाई-2 रीति-सिद्धांत- रीति की अवधारणा, काव्य-गुण, रीति एवम् शैली, रीति-सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।
वक्रोक्ति -सिद्धांत -वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवम् अभिव्यंजनावाद।
व्यावहारिक समीक्षा -किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

ईकाई-3 ध्वनि -सिद्धांत -ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद,गुणीभूत व्यंग्य, चित्र काव्य।
औचित्य -काव्य -प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

ईकाई-4 हिंदी कवि -आचार्यों का काव्यशास्त्रीय चिंतन -लक्षण-काव्य-परंपरा एवम् कवि-शिक्षा।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. रस-सिद्धांत-डॉ.नगेन्द्र (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली)
2. रस-सिद्धांत की दार्शनिक और नैतिक व्याख्या-डॉ.तारकनाथ बाली (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
3. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका-डॉ.नगेन्द्र
4. अभिनव का रस विवेचन-नगीनदास पारेख
5. समीक्षा लोक-भगीरथ दीक्षित
6. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा-डॉ.नगेन्द्र
7. साहित्य काव्य-विमर्श-डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
8. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य सिद्धांत-डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. हिंदी आलोचना का विकास-नंदकिशोर नवल
10. काव्य के तत्त्व-देवेन्द्रनाथ शर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र -3 प्रयोजनमूलक हिंदी Core Course-03

प्रस्तावना- भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयामों का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ़ होगा।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 कामकाजी हिंदी

1. हिंदी के विभिन्न रूप- सर्जनात्मक भाषा,संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।
2. कार्यालयी हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य- प्रारूपण, पत्र-लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण।
3. पारिभाषिक शब्दावली- स्वरूप एवम् महत्व, पारिभाषिक शब्दावली- निर्माण के सिद्धांत।
4. ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली।

ईकाई-2 हिंदी कंप्यूटिंग एवम् पत्रकारिता-1

5. कंप्यूटर- परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र वेब पब्लिशिंग का परिचय।
6. इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवम् इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र।
7. पत्रकारिता- स्वरूप एवम् विभिन्न प्रकार।

ईकाई-3 हिंदी कंप्यूटिंग एवम् पत्रकारिता-2

8. इंटरनेट एक्सप्लोइट अथवा नेटस्केप।
9. लिंक, ब्राउजिंग, ई-मेल भेजना-प्राप्त करना, हिंदी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग अपलोडिंग,हिंदी सॉफ्टवेयर पैकेज।
10. हिंदी पत्रकारिता:उद्भव और विकास।
11. प्रमुख प्रेस कानून एवम् आचार संहिता।

ईकाई-4 समाचार-लेखन

12. समाचार-लेखन-कला।
13. संपादन के आधारभूत तत्व।
14. व्यावहारिक प्रूफ शोधन।
15. शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवम् शीर्षक-संपादन।
16. संपादकीय-लेखन।
17. पृष्ठ-सज्जा।
18. साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवम् प्रेस-प्रबंधन।

अंक विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. प्रयोजनमूलक हिंदी:प्रासंगिकता एवम् परिदृश्य-डॉ.सु.नागलक्ष्मी (जवाहर पुस्तकालय, मथुरा)
2. प्रयोजनमूलक हिंदी- कमल कुमार बोस (क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली)
3. हिंदी पत्रकारिता-कृष्ण बिहारी मिश्र (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली)
4. प्रयोजनमूलक हिंदी:संरचना एवम् अनुप्रयोग-डॉ.रामप्रकाश एवम् डॉ दिनेशगुप्त (राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली)
5. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता-डॉ.दिनेश प्रसाद सिंह (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
6. प्रयोजनमूलक हिंदी-विनोद गोदरे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)

7. प्रयोजनमूलक हिंदीःसिद्धांत और प्रयोग-दंगल झाल्टे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
8. राजभाषा प्रशासनिक शब्दकोश-डॉ.एस.त्यागी (भारत भारती, दिल्ली)
9. कार्यालयीय हिंदी-डॉ.विजयपाल सिह
10. प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन-डॉ.भोलानाथ तिवारी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
11. प्रयोजनमूलक हिंदी के के विविध आयाम-माया सिंह, सिद्धेश्वर काश्यप (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
12. कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग-विजयकुमार मल्होत्रा
13. कंप्यूटर और हिंदी-डॉ.हरिमोहन
14. राजभाषा हिंदी- कैलाशचंद्र भाटिया (वाणी प्रकाश, दिल्ली)
15. कंप्यूटर-डॉ.सी.एल.गर्ग
16. पत्रकारिताःविविध विधाएँ-डॉ.राजकुमारी रानी (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
17. संपादन-कला-डॉ.हरिमोहन
18. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन
19. आधुनिक विज्ञापन और जन संपर्क-डॉ.तारेश भाटिया
20. समाचार फीचर लेखन एवम् संपादन कला--डॉ.हरिमोहन
21. ब्रेक के बाद-सुधीश पचौरी
22. संपादन कला एवम् प्रूफ पठन-डॉ.हरिमोहन
23. पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ-डॉ.भोलानाथ तिवारी

प्रश्नपत्र -4 आधुनिक हिंदी काव्य **Elective Course-01**

प्रस्तावना- आधुनिक हिंदी काव्य नवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में इसमें नवीन संवेदनाएँ, भावनाएँ तथा नवीन विचार अभिव्यक्त हुए हैं। इसकी विविध धाराएँ हैं। इसलिए संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक तथा प्रासंगिक है।

1. कामायनी-जयशंकर प्रसाद (संदर्भ के लिए लज्जा सर्ग)
2. साकेत-मैथिलीशरण गुप्त (साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाइ-1 1. द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रमुख विशेषताएँ।
2. द्विवेदीयुग के प्रतिनिधि कवि।

ईकाई-2 1. छायावादी काव्यः शब्द,परिभाषाएँ एवम् विशेषताएँ।
2. छायावाद का ऐतिहासिक महत्व।

ईकाइ-3 साकेत

1. राष्ट्रीय चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त।
2. 'साकेत': सांस्कृतिक आधार, युगीन आदर्श, अंतर्वस्तु एवम् वैष्णव भक्ति-भावना।
3. 'साकेत' की प्रबंधात्मकता
3. उर्मिला, राम और कैकेयी के चरित्र।
4. नवम् सर्ग की कथा-योजना और काव्य-वैभव।

ईकाइ-4 कामायनी

1. प्रसाद की काव्य-यात्रा के विभिन्न चरण।
2. 'कामायनी' में इतिहास और कल्पना
3. 'कामायनी' का महाकाव्यत्व।
4. 'कामायनी'- एक रूपक काव्य
5. 'कामायनी' की पात्र-सृष्टि

6. 'कामायनी' में अभिव्यक्त दार्शनिकता

7. 'कामायनी': भाव पक्ष और कला पक्ष।

अंक विभाजनः

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. जयशंकर प्रसाद-आचार्य नंददुलारे वाजपेयी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
2. मैथिलीशरण गुप्त- संपादक-नंदकिशोर नवल (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
3. मैथिलीशरण गुप्तः एक मूल्यांकन-राजीव सक्सेना,हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली
4. मैथिलीशरण गुप्तःनंदकिशोर नवल (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
5. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन-डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6. कामायनीः एक पुनर्विचार-गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ-डॉ.नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
8. कामायनी-लोचन (प्रथम और द्वितीय खण्ड) डॉ.उदयभानु सिंह (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
9. कामायनी की आलोचना-प्रक्रिया-डॉ.गिरिजा राय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

अथवा

प्रश्नपत्र – 4 छायावाद एवम् छायावादोत्तर काव्य **Elective Course-01**

प्रस्तावना- छायावाद हिंदी के आधुनिक काल की कविता की एक नूतन और मौलिक उपलब्धि है। इसमें कवियों ने अपनी स्वानुभूति की अभिव्यक्ति की है। प्रेम, प्रकृति और अध्यात्म इसके मुख्य विषय रहे हैं। शैली इसकी नवीन है। प्रसाद, पंत, महादेवी वर्मा और निराला इसके मील-स्तंभ हैं। छायावाद के बिना हम इस शताब्दी की धड़कनों को समझने में असमर्थ होंगे। अतः इसका अध्ययन-मनन बहुत ही प्रासंगिक एवम् अनिवार्य है।

1. प्रसाद - आँसू (प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
2. दीपशिखा- महादेवी वर्मा (प्रकाशक- लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
   निम्नलिखित कविताएँ- ग्रामयुवती, ग्रामनारी, वे आँखें, ग्राम वधू, ग्राम श्री, भारतमाता, संध्या के बाद, मजदूरनी के प्रति, नारी, उद्बोधन, वाणी।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. छायावादः शब्द,परिभाषाएँ एवम् प्रमुख विशेषताएँ।
2. छायावाद के प्रवर्तक।

ईकाई-2 1. प्रगतिवादः शब्द,परिभाषाएँ एवम् प्रमुख विशेषताएँ।
2. प्रगतिवाद के प्रमुख कवि।

ईकाई-3 प्रसाद - आँसू
1. कवि जयशंकर प्रसाद की काव्य-यात्रा।
2. 'आँसू': एक वेदना-काव्य।
3. छायावाद की एक प्रमुख रचनाः 'आँसू'।
4. 'आँसू' का आलम्बन तथा काव्य-रूप।
5. 'आँसू' में प्रकृति-चित्रण।
6. 'आँसू': भाव-पक्ष और कला-पक्षा

ईकाइ-4 दीपशिखा- महादेवी वर्मा

1. महादेवी वर्मा की काव्य-यात्रा।
2. छायावादी काव्य और महादोवी वर्मा
3. 'दीपशिखा': एक श्रेष्ठ गीतिकाव्य के रूप में
4. 'दीपशिखा': भाव-पक्ष
5. 'दीपशिखा': कला-पक्ष
6. आधुनिक गीतिकाव्य में 'दीपशिखा' का स्थान

अंक विभाजनः

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. छायावाद-डॉ.नामवर सिंह (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. छायावाद के आधार स्तंभ-गंगाप्रसाद पाण्डेय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
3. जयशंकर प्रसाद-आ.नंददुलारे वाजपेयी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
4. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)
5. हिंदी साहित्य का इतिहास डॉ.नगेन्द्र (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)
6. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.नामवर सिंह (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
7. हिंदी साहित्य-उद्भव और विकास-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
8. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-2 डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.रामकुमार वर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
10. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
11. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.बच्चन सिह (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
12. छायावाद-डॉ.नामवर सिह (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
13. छायावाद के आधार स्तंभ-गंगाप्रसाद पाण्डेय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
14. महादेवी-इन्द्रनाथ मदान (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
15. महीयसी महादेवी-गंगाप्रसाद विमल (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
16. महादेवी-डॉ.परमानंद श्रीवास्तव (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र - 5 विशिष्ट युग प्रवृत्ति का अध्ययन

आदिकाल **Multi Disciplinary Course-03**

हिंदी साहित्य की उचित जानकारी के लिए आदिकाल का अध्ययन अनिवार्य है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 अपभ्रंशः अर्थ और स्वरूप, साहित्यिक भाषा के रूप में अपभ्रंश का विकास
अपभ्रंश काव्य-प्रबंधात्मक, मुक्तक, नीति, वीर और श्रृंगार काव्य-धाराएँ
अपभ्रंश और हिंदी काव्य का संबंध

ईकाई-2 आदिकाल्य की साहित्यिक प्रवृति-ऐतिहासिक,श्रृंगारिक एवम् लौकिक काव्य।
आदिकाव्य की शिल्पगत विशेषताएँ-कथानक-शैलियाँ एवम् रूढियाँ,गेयता ,काव्यरूप एवम् भाषा।

ईकाई-3 1.पृथ्वीराज रासोः पदमावती समय सं.माताप्रसाद गुप्त (लोकभारती प्रकाशन)
1.कवि चंद बरदाई-परिचय।

2.'पृथ्वीराज रासो' : आदिकालीन प्रमुख रचना।

3.पदमावती समय' का कथानक

3.'पदमावती समय' में इतिहास और कल्पना।

4.'पद्मावती समय : भाव-पक्ष और कला-पक्ष

ईकाई-4 2.ढोला मारु रा दूहा –नरपति नाल्ह

1.'ढोला मारू रा दूहा' : एक श्रेष्ठ मुक्त काव्य

2.'ढोला मारू रा दूहा' में श्रृंगार-चित्रण

3.'ढोला मारू रा दूहा' : सौंदर्य-चित्रण

4.ढोला और मालवणी।

5.'ढोला मारू रा दूहा' में मारवणी का विरह-वर्णन

6.'ढोला मारू रा दूहा' : काव्य-सौष्ठव।

अंक विभाजन-

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
2. हिंदी साहित्य का आदिकाल-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (वाणी प्रकाशन,इलाहाबाद)
3. हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग-डॉ.नामवर सिह (लोकभारती)
4. पृथ्वीराज रासो: भाषा और साहित्य-डॉ.नामवरसिंह (राजकमल प्रकाशन,दिल्ली)
5. पुरानी हिंदी-चंद्रधर शर्मा गुलेरी (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
6. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो-संपा.ह.प्र.द्विवेदी-डॉ.नामवर सिंह (साहित्य भवन,'इलाहाबाद)

M.A. DEGREE COURSE HINDI

1ST SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER- 1 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य Core Course-1	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
2	PAPER -2 भारतीय काव्यशास्त्र एवम् साहित्यालोचन Core Course-2	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
3	PAPER- 3 प्रयोज़नमूलक हिंदी Core Course-3	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04

4	PAPER -4 आधुनिक हिंदी काव्य Elective Course-1	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
5	PAPER -4 छायावाद एवम् छायावादोत्तर काव्य Elective Course-1	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
6	PAPER- 5 आदिकाल Multi Disciplinary Course-1	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
7	Self Studies, Seminar, Assignments & Tutorials Self Study Course-1	-	-	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	02
8					Total Credits	22

Model Of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of five course in each Semester. Four Hours for each course per week Total teaching hours per week=20				Each Day 5th Hour can be used for seminar/presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

एम.ए. हिंदी

सेमेस्टर-2

(2015-2016, 2016-2017 एवम् 2017-2018 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र - 6 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य Core Course-04

प्रस्तावना: भक्तिकाल का काव्य लोक-जागरण और लोक-मंगल का नवीन स्वर लेकर आया। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखा है। तो रीतिकालीन काव्य अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति में बेजोड़ रहा है। अतः इनका अध्ययन समाज, संस्कृति और युग को समझने के लिए अनिवार्य है।

1. विनयपत्रिका-संपा.वियोगी हरि
2. घनानंदः काव्य और आलोचना संपा.डॉ.किशोरी लाल (१ से २५ कवित्त)
   (साहित्य भवन प्रा.लि. जीरो रोड, इलाहाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 भक्तिकालः सगुण भक्ति-धारा और तुलसीदास।
रामभक्ति-धाराः उद्भव और विकास
तुलसी का जीवन-वृत्त।

ईकाई-2 रीतिकालीन काव्य-धाराएँ।
रीतिकालीन स्वच्छन्द काव्यधारा में घनानंद का स्थान।
घनानंदः जीवन-परिचय और रचनाएँ।

ईकाई-3 तुलसीदास

1. 'विनयपत्रिका': काव्य-स्वरूप।
2. 'विनयपत्रिका': वस्तु-विधान।
3. 'विनयपत्रिका' में अभिव्यक्त कवि की दास्य-भक्ति।
4. 'विनयपत्रिका': भाव और कला-पक्ष।

ईकाई-4 घनानंद- काव्य और आलोचना

1. 'प्रेम की पीर' के कवि घनानंद।
2. घनानंद की भक्ति-भावना।
3. घनानंद के काव्य की विशेषताएँ।

अंक विभाजनः

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. तुलसी-संपा. उदयभानु सिंह
2. तुलसी की साधना-आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र
3. गोस्वामी तुलसीदास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
4. तुलसीदास-नंदकिशोर नवल (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली)
5. तुलसीदास-संपा.डॉ.विश्वनाथ तिवारी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
6. विनयपत्रिका और निराला के विनयगीत-डॉ.मधुप कुमार (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
7. घनानंद और स्वच्छंद काव्य-धारा-डॉ.मनोहर गौड

8. घनानंद का काव्य-डॉ.रामदेव शुक्ल (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. घनानंद का काव्य-शिल्प- डॉ.लखनपाल सिंह

प्रश्नपत्र -7 पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवम् साहित्यालोचन Core Course-05

प्रस्तावना- किसी भी रचना की विशिष्टता एवम् मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र और साहित्यालोचन का ज्ञान अनिवार्य है। इनसे ही साहित्यिक समझ विकसित हो सकती है। इससे ही वह दृष्टि मिलती है जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्य की परख हो सकती है। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना आस्वाद करने तथा रचना को उसकी समग्रता में समझने के लिए पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. प्लेटो - काव्य-सिद्धांत।
2. अरस्तू - अनुकरण-सिद्धांत।
3. लोंजाइनस - उदात्त की अवधारणा।

ईकाई-2 1. ड्राइडन के काव्य - सिद्धांत।
2. वर्ड्सवर्थ -काव्य-भाषा का सिद्धांत।
3. कॉलरिज -कल्पना-सिद्धांत और ललित-कल्पना।

ईकाई-3 1. मैथ्यू आर्नल्ड -आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य।
2. टी.एस.इलियट-परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।
3. आई.ए.रिचर्ड्स - रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

ईकाई-4 1. सिद्धांत और वाद-आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद तथा अस्तित्ववाद-सामान्य परिचय व विशेषताएँ।
2. आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ-संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद- सामान्य परिचय व विशेषताएँ।

अंक-विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. अरस्तू का काव्यशास्त्र-डॉ.नगेन्द्र
2. काव्य में उदात्त-तत्व-डॉ.महेन्द्र चतुर्वेदी
3. उदात्त के बारे में-डॉ.निर्मला जैन
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा-डॉ. नगेन्द्र
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र-डॉ.भगीरथ मिश्र
6. मार्क्सवादी,समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना-डॉ.शशिभूषण पांडेय (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
7. पाश्चात्य साहित्य-चिंतन-संपा.निर्मला जैन,कुसुम बाँठिया (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
8. कार्ल मार्क्स-कला और साहित्य-चिंतन-संपा.डॉ.नामवर सिंह
9. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद-सुधीश पचौरी (हिमाचल प्रकाशन भंडार,दिल्ली)
10. उत्तर आधुनिकता-कुछ विचार-संपा.देव शंकर नवीन तथा मिश्र (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
11. देरिदा का विखंडन और साहित्य-सुधीश पचौरी (आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा)
12. उत्तर आधुनिकः साहित्यिक विमर्श-सुधीश पचौरी

13. शास्त्रवादी और स्वच्छंदतावादी साहित्यादर्श और समीक्षा-प्रणाली-पी.वासवदत्ता (स्वराज प्रकाशन)

प्रश्नपत्र -8 प्रयोजनमूलक हिंदी **Core Course-06**

प्रस्तावना- भाषा के प्रयोजनपरक आयाम का संबंध हमारी सामाजिक आवश्यकताओं और जीवन-व्यवहार से है और व्यक्तिपरक होकर भी जो समाज-सापेक्ष सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त होती है। उत्तर आधुनिक काल में जीवन और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं और दायित्वों की पूर्ति के लिए, रोजी-रोटी के लिए विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में उपयोग की जानेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयामों का अध्ययन अति आवश्यक है। इससे राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का संस्कार भी दृढ होगा।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई–1 मीडिया लेखन

1. जनसंचार- प्रौद्योगिकी एवम् चुनौतियाँ।
2. विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप-मुद्रण, दृश्य-श्रव्य, इंटरनेट।
3. साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण।

ईकाई-2 मीडिया लेखन

1. श्रव्य माध्यम (रेडियो) मौखिक भाषा का प्रकृति, समाचार-लेखन एवम् वाचन, रेडियो नाटक। उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन-लेखन,फीचर तथा रिपोर्ताज।
2. दृश्य-श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविजन एवम् वीडियो),दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति, दृश्य एवम् श्रव्य सामग्री का सामंजस्य, पार्श्व वाचन (वायस ओवर), पटकथा-लेखन, टेली-ड्रामा-डॉक्यू ड्रामा, संवाद-लेखन, विज्ञापन की भाषा।
3. इंटरनेट- सामग्री सृजन।

ईकाई-3 अनुवाद - सिद्धांत एवम् व्यवहार

1. अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवम् प्रविधि।
2. हिंदी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका।
3. कार्यालयी हिंदी और अनुवाद।

ईकाई-4 व्यावहारिक -अनुवाद-अभ्यास

1. व्यावहारिक -अनुवाद-गुजराती या अंग्रेजी से हिंदी में।
2. कार्यालयी अनुवाद- कार्यालयी एवम् प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ, पदनाम, विभाग।
3. पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद।
4. सारानुवाद।

अंक विभाजन-

ईकाई 1 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

ईकाई 2 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. प्रयोजनमूलक हिंदी:प्रासंगिकता एवम् परिदृश्य-डॉ.सु.नागलक्ष्मी (जवाहर पुस्तकालय, मथुरा)
2. प्रयोजनमूलक हिंदी-कमल कुमार बोस (क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली)
3. हिंदी पत्रकारिता-कृष्ण बिहारी मिश्र (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली)
4. प्रयोजनमूलक हिंदी:संरचना एवम् अनुप्रयोग-डॉ.रामप्रकाश एवम् डॉ दिनेशगुप्त (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
5. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता-डॉ.दिनेश प्रसाद सिंह (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
6. प्रयोजनमूलक हिंदी-विनोद गोदरे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)

7. प्रयोजनमूलक हिंदी:सिद्धांत और प्रयोग-दंगल झाल्टे (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
8. मीडिया-लेखन-डॉ.चंद्रप्रकाश मिश्र (संजय प्रकाशन, दिल्ली)
9. व्यावहारिक अनुवाद-डॉ.एन.ई.विश्वनाथ ऐयर
10. अनुवाद-विज्ञान-डॉ.भोलानाथ तिवारी
11. अनुवाद-बोध-डॉ.गार्गी गुप्त
12. अनुवाद-प्रक्रिया एवम् परिदृश्य-डॉ.रीतारानी पालीवाल (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
13. दूरदर्शन की भूमिका-सुधीश पचौरी
14. जनसंचार-विविध आयाम-ब्रजमोहन गुप्त
15. मीडिया और साहित्य-सुधीश पचौरी
16. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन

प्रश्नपत्र -9 आधुनिक हिंदी काव्य **Elective Course-02**

प्रस्तावना- आधुनिक हिंदी काव्य नवीन भावभूमि एवम् नवीन वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में इसमें नवीन संवेदनाएँ, भावनाएँ तथा नवीन विचार अभिव्यक्त हुए हैं। इसकी विविध धाराएँ हैं। इसलिए संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक तथा प्रासंगिक है।

1. कुरुक्षेत्र- रामधारी सिंह 'दिनकर'
2. कनुप्रिया - धर्मवीर भारती (प्रकाशक- भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 हिंदी का राष्ट्रीय कविता: प्रवर्तक और विशेषताएँ।

ईकाई-2 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी प्रबंध-काव्य।
हिंदी कृष्ण-काव्य: उद्भव और विकास।

ईकाई-3 कुरुक्षेत्र

1. रामधारी सिंह 'दिनकर': व्यक्तित्व और कृतित्व
2. 'कुरुक्षेत्र' का काव्य-स्वरूप
3 'कुरुक्षेत्र' का प्रतिपाद्य तथा संदेश
4. 'कुरुक्षेत्र' के पात्र
5. 'कुरुक्षेत्र' के प्रेरणास्रोत
6. 'कुरुक्षेत्र' में आधुनिकता
6. 'कुरुक्षेत्र' का भाव और कला-पक्ष।

ईकाई-4 कनुप्रिया

1.धर्मवीर भारती: व्यक्तित्व और कृतित्व।
2.'कनुप्रिया': काव्य-स्वरूप।
3.'कनुप्रिया' में आधुनिक-बोध-अस्तित्ववादी व क्षणवादी-जीवन-दर्शन।
4.आधुनिक हिंदी प्रबंध-काव्यों में 'कनुप्रिया' का स्थान।
5.'कनुप्रिया': कनु और राधा का चरित्र।
6.'कनुप्रिया': प्रबंध-कौशल।

अंक विभाजन:

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. धर्मवीर भारतीः युग-चेतना और अभिव्यक्ति-डॉ.सरिता शुक्ला (चिंतन प्रकाशन, कानपुर)
2. धर्मवीर भारती:अनुभव और अभिव्यक्ति-लक्ष्मणदत्त गौतम (भारत पुस्तक भंडार, दिल्ली)
3. नई कविता के प्रतिमान-लक्ष्मीकांत वर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
4. नयी कविता(काव्य पक्ष)-रामस्वरूप चतुर्वेदी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
5. दिनकर और उनकी काव्य-प्रवृत्तियाँ-डॉ.शिवचंद्र शर्मा, जनवाणी प्रकाशन, क़लकत्ता
6. युगचारण दिनकर-सावित्री सिंहा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
7. रामधारी सिंह दिनकर-मन्मथनाथ गुप्त, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
8. राष्ट्र कवि दिनकर-सं.डॉ.गोपाल, ग्रंथ निकेतन, पटना
9. दिनकर का काव्य-डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सेना, मैकमिलन, दिल्ली
10. उर्वशी:विचार और विश्लेषण-डॉ.वचनदेव कुमार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
11. दिनकर और उनकी उर्वशी-डॉ.देशराज सिंह भाटी, अशोक प्रकाशन, दिल्ली
12. उर्वशी-एक पुनर्मूल्यांकन-डॉ.विजेन्द्रनारायण सिंह, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
13. उर्वशीः कामुकी और चिंतन-डॉ.अरविंद पांडेय, साहित्य संस्थान, कानपुर

अथवा

प्रश्नपत्र - 9 छायावाद Elective Course-02

प्रस्तावना- छायावाद हिंदी के आधुनिक काल की कविता की एक नूतन और मौलिक उपलब्धि है। इसमें कवियों ने अपनी स्वानुभूति की अभिव्यक्ति की है। प्रेम, प्रकृति और अध्यात्म इसके मुख्य विषय रहे हैं। शैली इसकी नवीन है। प्रसाद, पंत, महादेवी वर्मा और निराला इसके मील-स्तंभ हैं। छायावाद के बिना हम इस शताब्दी की धड़कनों को समझने में असमर्थ होंगे। अतः इसका अध्ययन-मनन बहुत ही प्रासंगिक एवम् अनिवार्य है।

1. रश्मिबंध-पंत (प्रकाशक-
2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'– तुलसीदास

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. छायावाद के उद्भव व पतन के कारण।

ईकाई-2 1. छायावाद का ऐतिहासिक महत्व।
2. हिंदी साहित्य में छायावाद का स्थान।

ईकाई-3 रश्मिबंध

1.पंतः साहित्यिक परिचय।
2 'रश्मिबंध' में प्रकृति-चित्रण
3. छायावाद और 'रश्मिबंध'
4. 'रश्मिबंध' में नारी-भावना
5. 'रश्मिबंध' एक गीतिकाव्य के रूप में
6. 'रश्मिबंध' का भाव और कला-पक्ष

ईकाई-4 तुलसीदास

1.निराला-व्यक्तित्व और कृतित्व।
2.'तुलसीदास' का काव्य-स्वरूप।
3."तुलसीदास' की पात्र-सृष्टि।
4."तुलसीदास'में रस-योजना व प्रकृति-चित्रण।

5.'तुलसीदास' का कला-पक्ष।

अंक विभाजनः

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. निराला का काव्यःविविध संदर्भ-डॉ.मीरा श्रीवास्तव (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
2. निराला-संपा. डॉ.विश्वनाथ तिवारी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
3. सुमित्रानंदन पंत-आनंद प्रकाश दीक्षित
4. पंत की काव्य-भाषा-डॉ.कांता पंत (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
5. छायावाद-डॉ.नामवर सिंह (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
6. निराला-डॉ.रामविलास शर्मा (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)

प्रश्नपत्र - 10 दृश्य-श्राव्य माध्यम लेखन **Multi Disciplinary Course-02**

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गयी है। हिंदी भाषा और साहित्य का इन माध्यमों में अधिकाधिक स्तरीय प्रयोग तभी हो सकता है जब इन दृश्य-श्रव्य माध्यमों ले संबंधित विधाओं का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया जाए। यह पाठ्यक्रम रोजगारपरक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।
हिंदी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास।
हिंदी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ।

ईकाई-2 रेडियो नाटक की प्रविधि।
रंगनाटक, पाठ्यनाटक और रेडियो नाटक में अतर।
रेडियो नाटक के प्रमुख भेद-रेडियो धारावाहिक, रेडियो रुपांतर, रेडियो फैन्टेसी, संगीत रूपक, आलेख रूपक (डॉक्यूमेंट्री फीचर)।

ईकाई-3 टी.वी. नाटक की तकनीक।
टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी.वी.धारावाहिक में साम्य-वैषम्य।
संचार माध्यम के अन्य विविध रूप।
साहित्यिक विधाओं की दृश्य-श्रव्य रूपांतरण-कला।

ईकाई-4 इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन-संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।
संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा।
विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि।
संचार माध्यमों की भाषा।

अंक विभाजन-

ईकाई 1 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 2 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.मीडिया-लेखन-डॉ.चंद्रप्रकाश मिश्र (संजय प्रकाशन, दिल्ली)
2.दूरदर्शन की भूमिका-सुधीश पचौरी

3.जनसंचार-विविध आयाम-ब्रजमोहन गुप्त
4.मीडिया और साहित्य-सुधीश पचौरी
5.रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन
6. ब्रेक के बाद-सुधीश पचौरी
7. मीडिया और बाजारवाद-रामशरण जोशी (राधाकृष्ण प्रकाशन)
8. फीचर लेखन:स्वरूप और शिल्प-डॉ.मनोहर प्रभाकर(राधाकृष्ण प्रकाशन)
9. समाचार संपादन-कमल दीक्षित, महेश दर्पण (राधाकृष्ण प्रकाशन)
10. टेलीविज़न कार्यक्रम निर्माण प्रक्रिया-महाराज शाह (प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली)
11. भारतीय इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-देवव्रत सिंह (प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली)
12. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-पी.के.आर्य (प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली)

M.A. DEGREE COURSE HINDI

2ND SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER- 6 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य Core Course-4	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
2	PAPER -7 पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवम् साहित्यालोचन Core Course-5	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
3	PAPER -8 प्रयोजनमूलक हिंदी Core Course-6	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
4	PAPER- 9 आधुनिक हिंदी काव्य Elective Course-2	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
5	PAPER- 9 छायावाद Elective Course-2	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
6	PAPER -10 दृश्य-श्राव्य माध्यम लेखन Multi Disciplinary Course-2	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
7	Self Studies, Seminar, Assignments & Tutorials Self Study Course-2	-	-	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	02

8					Total Credits	22

Model Of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of five course in each Semester. Four Hours for each course per week Total teaching hours per week=20				Each Day 5th Hour can be used for seminar/presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

एम.ए. हिंदी

सेमेस्टर-3

(2015-2016, 2016-2017 एवम् 2017-2018 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र -11 भाषा -विज्ञान Core Course-07

प्रस्तावना- साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का ज्ञान अनिवार्य है। भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा-संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतःसंबंधों के विन्यास को भाषा-विज्ञान आलोकित ही नहीं करता, वरन् अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि तथा भाषा-विषयक विवेचन के लिए एक भाषा भी प्रदान करता है। भाषा के साहित्येतर रूपों के अध्ययन में भी भाषा-विज्ञान की महती भूमिका है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 भाषा और भाषा -विज्ञान -भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण,भाषा-व्यवस्था और भाषा-व्यवहार, भाषा-संरचना और भाषिक -प्रकार्य. भाषा- विज्ञान-स्वरूप एवम् व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

ईकाई-2 स्वनप्रक्रिया - स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण,स्वनिक परिवर्तन, स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिम विश्लेषण।

ईकाई-3 व्याकरण- रूपप्रकिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद-मुक्त-आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य. वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य-विश्लेषण, निकटस्थ-अवयव विश्लेषण, गहन-संरचना और बाह्य-संरचना।

ईकाई-4 अर्थविज्ञान -अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ-परिवर्तन।

साहित्य और भाषा -विज्ञान -साहित्य के अध्ययन में भाषा-विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

अंक विभाजनः

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. भाषा-विज्ञान-डॉ.भोलानाथ तिवारी (किताब महल, इलाहाबाद)
2. भाषा-विज्ञान की भूमिका-देवेन्द्रनाथ शर्मा (राधाकृष्ण प्रकाशन)
3. भाषा-विज्ञान-श्यामसुंदर दास (अनु प्रकाशन, जयपुर)
4. सामान्य भाषा-विज्ञान-डॉ.बाबूराम सक्सेना (हिंदी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग)
5. भाषा-विज्ञान एवम् भाषा-शास्त्र-डॉ.कपिलदेव द्विवेदी (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
6. भाषा-विज्ञान-सैद्धांतिक चिंतन- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
7. समसामयिक भाषा- विज्ञान-डॉ.कविता रस्तोगी (सुलभ प्रकाशन, लखनऊ)

8. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का स्वरूप विकास-डॉ.देवेन्द्रप्रसाद सिंह (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र - 12 हिंदी साहित्य का इतिहास **Core Course-08**

प्रस्तावना- आठवीं-नवीं शताब्दी से लेकर आज तक के हिंदी के विकास परिदृश्य के साथ उसकी सर्जनात्मकता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिंदी साहित्य के इतिहास के द्वारा ही दिया जा सकता है। अतः हिंदी साहित्य के इतिहास का अध्ययन सर्वथा योग्य एवम् आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1

1. इतिहास-दर्शन और साहित्येतिहास
2. हिंदी साहित्य के इतिहास की लेखन परंपरा,आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ।
3. हिंदी साहित्य का इतिहास- काल-विभाजन,सीमा-निर्धारण और नामकरण।

ईकाई-2

4. हिंदी साहित्य-आदिकाल की पृष्ठभूमि,सिद्ध और नाथ साहित्य,रासो-काव्य,जैन-साहित्य।
5. हिंदी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, काव्य-धाराएँ, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।

ईकाई-3

6. भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक-चेतना एवम् भक्ति-आंदोलन, विभिन्न काव्य-धाराएँ तथा उनका वैशिष्ट्य।
7. प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
8. भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्य-ग्रंथ,सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवम् लोक-जीवन के तत्व।
9. राम और कृष्ण-काव्य,राम-कृष्ण-काव्येतर काव्य,भक्तितर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य.भक्तिकालीन गद्य-साहित्य।

ईकाई-4

10. उत्तर मध्यकाल(रीतिकाल)की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल-सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण-ग्रंथों की परंपरा, रीति कालीन साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध,रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त), प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ, रीतिकालीन गद्य साहित्य।

अंक विभाजनः

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 1 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. हिंदी साहित्य का आदिकाल-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (वाणी प्रकाशन,इलाहाबाद)
2. हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग-डॉ.नामवर सिंह
3. हिंदी साहित्य का अतीत-भाग-१-२-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
4. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास-डॉ.बच्चन सिंह

5. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)
6. हिंदी साहित्य का इतिहास डॉ.नगेन्द्र (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)
7. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.नामवर सिंह (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
8. हिंदी साहित्य-उद्भव और विकास-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
9. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-1 डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
10. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.रामकुमार वर्मा (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
11. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
12. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.बच्चन सिह (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
13. हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.लक्ष्मीसागर वाष्णेय (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
14. हिंदी का गद्य-साहित्य-डॉ. रामचंद्र तिवारी
15. हिंदी गद्य का विकास-डॉ.प्रसाद
16. दक्खिनी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.इकबाल अहमद (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
17. उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-प्रो.एहतेशाम हुसैन

प्रश्नपत्र -13 भारतीय साहित्य **Core Course-09**

प्रस्तावना- भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 भारतीय साहित्य

1.भारतीय साहित्य का स्वरूप।
2.भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ।
3. भारतीयता का समाजशास्त्र।

ईकाई-2 भारतीय साहित्य की समस्याएँ

4. भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिब।
5. हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

ईकाई-3 आनंदमठ-बंकिमचंद्र (बंगाली उपन्यास)

प्रकाशक- राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

बंकिमचंद्र- औपन्यासिक यात्रा का परिचय।

'आनंदमठ' का मूल प्रतिपाद्य।

'आनंदमठ' में अभिव्यक्त क्रांतिकारी विचारधारा।

'आनंदमठ' में अभिव्यक्त संव्यासी आंदोलन और बंगाल का अकाल।

'आनंदमठ' की पात्र-सृष्टि।

'आनंदमठ' राजनीतिक उपन्यास के रूप में

'आनंदमठ' में अभिव्यक्त देश-भक्ति।

1. **ईकाई-4 गोधूलि-एस.एल.भैरप्पा अनु.बी.आर.नारायण (कन्नड़ उपन्यास)**

प्रकाशक-शब्दकार, 2203, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली-6

भैरप्पा - व्यक्तित्व और कृतित्व।

'गोधूलि': एक भारतीय उपन्यास।

'गोधूलि' का केन्द्रीय विषय।

'गोधूलि' में संवाद-योजना, वातावरण, शीर्षक और उद्देश्य।

'गोधूलि' के पात्र।

'गोधूलि' में भैरप्पा की विचारधारा।

अंक विभाजनः ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. भारतीय साहित्य-डॉ.नगेन्द्र (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
2. भारतीय साहित्य की भूमिका-डॉ.रामविलास शर्मा (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
3. भारतीय उपन्यास की अवधारणा और रघुवीर चौधरी का सृजन-संपा.आलोक गुप्त (पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद)
4. भारतीय साहित्यःस्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ-के.सच्चिदानंद (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
5. भारतीय साहित्यः आशा और आस्था-डॉ.आरसु (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
6. गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधरी एवम् राधेश्याम शर्मा (गुजरात ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गांधीनगर)
7. भारतीय साहित्यः तुलनात्मक अध्ययन-सं.डॉ.ब्रजेश्वर वर्मा (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
8. भारतीय उपन्यास परंपरा और ग्रामकेन्द्री उपन्यास- भोलाभाई पटेल (पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद)
9. भारतीय साहित्य- डॉ.पाण्डेय-डॉ.अवस्थी (आशीष प्रकाशन, कानपुर)
10. बंगला साहित्य का इतिहास, भारतीय साहित्य अकादमी, दिल्ली
11. कला, साहित्य और संस्कृति-ई-एम.एस.नम्बूदरीपाद

प्रश्नपत्र - 14 आधुनिक गद्य साहित्य **Elective Course-03**

प्रस्तावना- आधुनिक काल में गद्य साहित्य के विविध रूपों का विकास इस बात का साक्षी है कि प्रौढ मन की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य ही में संभव है। निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य का विकास तेजी से हुआ है। मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास प्रक्रिया के साथ प्रामाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

1. कोणार्क-जगदीशचंद्र माथुर (राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली)
2. धरती धन न अपना-जगदीशचंद्र (प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 प्रसादयुगीन नाट्य-साहित्य।
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक- नया नाटक।

ईकाई-2 आँचलिक उपन्यासः उद्भव और विकास तथा विशेषताएँ।

ईकाई-3 कोणार्क-जगदीशचंद्र माथुर
नाटककार मोहन राकेशः सामान्य परिचय।

'कोणार्क': वस्तु-विन्यास।

'कोणार्क': में इतिहास और कल्पना।

'कोणार्क': प्रतिपाद्य।

'कोणार्क': तात्विक विश्लेषण।

रंगमंचीयता और 'कोणार्क'

ईकाई-4 धरती धन न अपना-जगदीशचंद्र

रेणुः साहित्यिक परिचय

आँचलिकता और धरती धन न अपना

'धरती धन न अपना': कथा-योजना।

'धरती धन न अपना'की पात्र-सृष्टि।

'धरती धन न अपना' में हरिजन समस्या

'धरती धन न अपना' में अभिव्यक्त जन-चेतना

'धरती धन न अपना' औपन्यासिक शिल्प

अंक विभाजनः ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. हिंदी नाटकः उद्भव और विकास-डॉ.दशरथ ओझा (राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली)
2. हिंदी के आँचलिक उपन्यास-संपा.डॉ.रामदरश मिश्र (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
3. आँचलिक उपन्यास-संवेदना और शिल्प-डॉ.ज्ञानचंद गुप्त (अभिनव प्रकाशन, दिल्ली)
4. हिंदी उपन्यास-डॉ.सुरेश सिहा (लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद)
5. आधुनिकता और हिंदी उपन्यास-डॉ.इंद्रनाथ मदान (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
6. हिंदी उपन्यास-एक अंतर्यात्रा-डॉ.रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
7. हिंदी नाटक-डॉ.बच्चन सिह (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
8. अठारह उपन्यास-राजेन्द्र यादव (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
9. **हिंदी नाटकः*आज तक-डॉ.वीणा गौतम**
10. हिंदी नाटकःउद्भव और विकास-दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
11. नाटककार जगदीशचंद्र माथुर-गोविन्द चातक

अथवा

प्रश्नपत्र - 14 हिंदी उपन्यास **Elective Course-03**

प्रस्तावना- हिंदी गद्य विधाओं में उपन्यास सबसे अधिक विकसित व लोकप्रिय है। आज तो उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है। अतः इस विधा का गहन अध्ययन अनिवार्य है।

1. गबन-प्रेमचंद
2. नदी के द्वीप-अज्ञेय (पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 प्रेमचंदयुगीन हिंदी उपन्यास।

ईकाई-2 हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास।

3. ईकाई-3 गबन-प्रेमचंद

प्रेमचंदः परिचय

'गबन': सामाजिक उपन्यास

'गबन'का कथा-शिल्प।

'गबन'के पात्र, संवाद, वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य और शीर्षक।

प्रेमचंद की उपन्यास-कला।

ईकाई-4 नदी के द्वीप-अज्ञेय

उपन्यासकार अज्ञेयः सामान्य परिचय

'नदी के द्वीप' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास।

'नदी के द्वीप': वस्तु-विन्यास।

'नदी के द्वीप': पात्र-सृष्टि।

'नदी के द्वीप': उद्देश्य और शीर्षक।

अंक विभाजनः ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. आज का हिंदी उपन्यास-डॉ.इंद्रनाथ मदान (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. हिंदी उपन्यास-एक अंतर्यात्रा-डॉ.रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
3. हिंदी उपन्यास-डॉ.सुषमा धवन (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
4. हिंदी उपन्यास की प्रवृतियाँ-डॉ.शशिभूषण सिंहल (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
5. हिंदी उपन्यासः उपलब्धियाँ-डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
6. आधुनिकता और हिंदी उपन्यास-डॉ.इन्द्रनाथ मदान (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
7. हिंदी उपन्यास का इतिहास-गोपाल राय (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
8. अज्ञेयःएक अध्ययन-डॉ.भोळाभाई पटेल
9. प्रेमचंद-एक विवेचन-डॉ.इन्द्रनाथ मदान
10. प्रेमचंदः एक अध्ययन-राजेश्वर गुरू

प्रश्नपत्र - 15 लोक-साहित्य **Multi-Disciplinary Course-03**

लोक-साहित्य के संकलन, संपादन, सर्वेक्षण, प्रकाशन द्वारा ही हम अपनी मूल संस्कृति का संरक्षण कर सकते हैं। गुजरात प्रदेश भी अपनी संस्कृति की विविधताओं से भरा है। अतः इसकी उपयोगिता निर्विवाद है।

ईकाई-1 लोक-संस्कृतिः अवधारणा, लोक-वार्ता और लोक-संस्कृति, लोक-संस्कृति और साहित्य।
लोक-साहित्यः अवधारणा, संस्कृत वाङ्गमय में लोकोन्मुखता।
वर्तमान अभिजात साहित्य और लोक-साहित्य का अंतःसंबंध।
लोक-साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध।
भारत में लोक-साहित्य के अध्ययन का इतिहास।
लोक-साहित्य की अध्ययन प्रक्रिया एवम् संकलन की समस्याएँ।

ईकाई-2 लोक-साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरणः लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-कथा, लोक-

गाथा, लोक-नृत्य-नाट्य, लोक-संगीत।
लोक-गीतः संस्कार-गीत, व्रत-गीत, श्रम-गीत, ऋतु-गीत, जाति-गीत।
लोक-नाट्यः रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वाँग, यक्षगान, भवाई संपेडा, विदेसिया, माच, भाँड़, तमाशा, नौटंकी, जात्र, कथकली।
दक्षिणी गुजरात की किसी एक बोली के लोक-साहित्य का अध्ययन।

ईकाई-3 लोक-कथाः व्रत-कथा, परी-कथा, नाग-कथा, बोध-कथा, कथानक-रूढियाँ अथवा अभिप्राय।
लोक-गाथाः ढोलामारू, गोपीचंद भरथरी, नल-दमयंती, लैला-मंजनूँ, हीर-राँझा, सोहनी-महीवाल, लोरिक-चंदा, आल्हा-हरदौल।

ईकाई-4 लोक-संगीतः लोकवाद्य तथा विशिष्ट धूनें।
लोक-भाषाः लोक-सुभाषित, मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ।

अंक-विभाजन- ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. लोकः परंपरा, पहचान और प्रवाह (राधाकृष्ण प्रकाशन)
2. रामलीलाः परंपरा और शैलियाँ (राधाकृष्ण प्रकाशन)
3. भारतीय लोक-साहित्य- श्याम परमार (राजकमल प्रकाशन)
4. बेला फूले आधी रात-देवेन्द्र सत्यार्थी
5. भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन-डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय
6. लोकसाहित्य की भूमिका- डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय(साहित्य भवन, इलाहाबाद)
7. लोकजीवन और साहित्य-डॉ.रामविलास शर्मा (वनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
8. लोक-साहित्य और संस्कृति-दिनेश्वर प्रसाद (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. हरियाणा प्रदेश का लोक-साहित्य-डॉयशंकरलाल यादव
10. लोक-साहित्यःसिद्धांत और प्रयोग-डॉ.श्रीराम शर्मा
11. गंगाघाटी के गीतःडॉ.हीरालाल तिवारी
12. लोक-साहित्य-डॉ.इन्दु यादव, साहित्य रत्नालय, कानपुर

M.A. DEGREE COURSE HINDI

3RD SEMESTER

Sr. No.	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -11 भाषा -विज्ञान Core Course-7	50+20=70	~~28+12~~=40 20+8=28	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
2	PAPER -12 हिंदी साहित्य का इतिहास Core Course-8	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
3	PAPER -13 भारतीय साहित्य Core Course-9	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
4	PAPER- 14 आधुनिक गद्य साहित्य Elective Course-3	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
5	PAPER- 14 हिंदी उपन्यास Elective Course-3	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
6	PAPER- 15 लोक-साहित्य Multi Disciplinary Course-3	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
7	Self Studies, Seminar, Assignments & Tutorials Self Study Course-3	-	-	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	02
8					Total Credits	22

Model Of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of five course in each				Each Day 5th Hour can

Tuesday	Semester.	be used for
Wednes	Four Hours for each course per week	seminar/presentation
Thursday	Total teaching hours per week=20	ect.
Friday		
Saturday	Self Study Course	

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत

एम.ए. हिंदी

सेमेस्टर-4

(2015-2016, 2016-2017 एवम् 2017-2018 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र -16 हिंदी भाषा **Core Course-10**

प्रस्तावना- साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का ज्ञान अनिवार्य है। भाषा-वैज्ञानिक आधार पर हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकास-क्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक-स्वरूप, विविध रूपता तथा हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाओं की जानकारी एवम् देवनागरी लिपि के विकास, वैशिष्ट्य और मानकीकरण का विवरण हिंदी के छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ-वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ- पालि, प्राकृत-शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण।

ईकाई-2 हिंदी की उपभाषाएँ और देवनागरी लिपि

हिंदी का भौगोलिक विस्तार-हिंदी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाडी और उनकी बोलियाँ. खडीबोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

देवनागरी लिपि-विशेषताएँ और मानकीकरण।

ईकाई-3 हिंदी का भाषिक स्वरूप

1. हिंदी की स्वनिम व्यवस्था, खंड्य, खंड्येतर. हिंदी शब्द रचना- उपसर्ग, प्रत्यय,समास. रूपरचना- लिग, वचन और कारक- व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप. हिंदी वाक्य-रचना- पदक्रम और अन्विति।
2. हिंदी के विविध रूप-संपर्क-भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिंदी, माध्यम-भाषा, संचार-भाषा, हिंदी की सांविधानिक स्थिति।

ईकाई-4 हिंदी कंप्यूटीकरण

1. हिंदी में कंप्यूटर सुविधाएँ- आंकडा-संसाधन और शब्द-संसाधन, वर्तनी-शोधक, मशीनी अनुवाद, हिंदी भाषा-शिक्षण।

अंक विभाजनः

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास-डॉ.उदयनारायण तिवारी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
2. हिंदी भाषा का इतिहास-डॉ.भोलानाथ तिवारी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
3. हिंदी भाषा और नागरी लिपि-डॉ.भोलानाथ तिवारी
4. भारतीय आर्यभाषा और हिंदी-सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
5. कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग-विजयकुमार मल्होत्रा
6. कंप्यूटर और हिंदी-डॉ.हरिमोहन
7. राजभाषा हिंदी-डॉ.कैलाशचंद्र भाटिया (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
8. राजभाषा का स्वरूप-कैलाशचंद्र भाटिया (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
9. आर्य और द्रविड भाषा-परिवारों का संबंध-डॉ.रामविलास शर्मा (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
10. हिंदी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप-अंबा प्रसाद सुमन
11. ग्रामीण हिंदी-डॉ.धीरेन्द्र वर्मा
12. पालि भाषा और साहित्य-इंद्रचंद्र शास्त्री
13. अपभ्रंश भाषा और व्याकरण-शिवसहाय पाठक

प्रश्नपत्र - 17 हिंदी साहित्य का इतिहास **Core Course-11**

प्रस्तावना- बीसवीं शताब्दीके प्रारंभ से लेकर आज तक के हिंदी के विकास परिदृश्य के साथ उसकी सर्जनात्मकता के विविध रूपों, प्रवृत्तियों और भाषा-शैलियों का ज्ञान हिंदी साहित्य के इतिहास के द्वारा ही दिया जा सकता है। अतः हिंदी साहित्य के इतिहास का अध्ययन सर्वथा योग्य एवम् आवश्यक है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1

1. आधुनिक काल की सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक एवम् सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् १८५७ ई. की राज-क्रांति और पुनर्जागरण।
2. भारतेन्दु-युग-प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
3. द्विवेदी-युग-प्रमुख साहित्यकार,रचनाएँ और साहित्यक विशेषताएँ।

ईकाई-2

4. हिंदी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम-विकास, छायावादी काव्य-प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
5. उत्तर छायावादी काव्य की विविध प्रवृतियाँ-प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत, समकालीन कविता.प्रमुख साहित्यकार,रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

ईकाई-3

6. हिंदी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा,रिपोर्ताज आदि) का विकास।
7. हिंदी आलोचना का उद्भव और विकास।

ईकाई-4

8. दक्खिनी हिंदी साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
9. उर्दू साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
10. हिंदीतर क्षेत्रों तथा देशांतर में हिंदी भाषा और साहित्य।

अंक विभाजनः

ईकाई 2 और 3 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 1 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)
2. हिंदी साहित्य का इतिहास डॉ.नगेन्द्र (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)
3. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.नामवर सिंह (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
4. हिंदी साहित्य-उद्भव और विकास-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
5. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-2 डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
6. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.रामकुमार वर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
7. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ-डॉ.जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
8. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.बच्चन सिह (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
10. दक्खिनी हिंदी -भाषा और साहित्य-डॉ.वी.पी.मुहम्मद
11. हिंदी का गद्य-साहित्य-डॉ. रामचंद्र तिवारी
12. हिंदी गद्य का विकास-डॉ.प्रसाद
13. मोरिशस में हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास-डॉ.श्यामधर तिवारी
14. दक्खिनी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.इकबाल अहमद (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
15. उर्दू साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-प्रो.एहतेशाम हुसैन (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

प्रश्नपत्र -18 भारतीय साहित्य **Core Course-12**

प्रस्तावना- भारतीय भाषाओं में हिंदी सर्वोपरि है। इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिक गंभीर बनाना जरूरी है। भारतीय साहित्य की रूप-रचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से छात्रों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है। इससे उनके ज्ञान एवम् सांस्कृतिक दृष्टि में अभिवृद्धि होगी।

1. मळेला जीव - पन्नालाल पटेल (जीवी-साहित्य अकादमी)
2. ययाति-वि.स.खांडेकर (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 1. तुलनात्मक साहित्यः सामान्य परिचय।
ईकाई-2 2. गुजराती उपन्यास साहित्य में पन्नालाल पटेल का स्थान।
ईकाई-3 मळेला जीव (जीवी) पन्नालाल पटेल (गुजराती उपन्यास)
पन्नालाल पटेल-साहित्यिक परिचय।

'मळेला जीव': एक आँचलिक उपन्यास।

'मळेला जीव' खेती और प्रीति का उर्मिकाव्य

'मळेला जीव' विफल प्रेम की ट्रेजिक कथा।

'मळेला जीव 'उपन्यास का प्रारंभ और अंत

'मळेला जीव': कानजी और जीवी तथा अन्य पात्र, पात्रों की मनःस्थिति का चित्रण।

'मळेला जीव': शीर्षक, लोकगीत-कथा का सुंदर संयोजन।

ईकाई-4 ययाति-वि.स.खांडेकर (मराठी उपन्यास)

'ययाति' की पात्र-सृष्टि-कच-देवयानी, यति,मंदार,अलका आदि।

'ययाति' में कच-देवयानी का असफल प्रेम।

'ययाति' में ययाति-अलका के संबंध।

'ययाति' में लेखक के चिंतनशील मन की व्याकुलता।

'ययाति' का शिल्प-विधान।

अंक विभाजनः

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. भारतीय उपन्यास की अवधारणा और रघुवीर चौधरी का सृजन-संपा.आलोक गुप्त (पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद)
2. गुजराती नवलकथा-रघुवीर चौधरी एवम् राधेश्याम शर्मा (गुजरात ग्रंथ निर्माण बोर्ड, गांधीनगर)
3. गुजराती नवलकथामां पात्र-निरूपण-रमेश दवे
4. तुलनात्मक अध्ययनः स्वरूप और समस्याएँ-राजमल बोरा (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
5. तुलनात्मक अध्ययनः भारतीय भाषाएँ और साहित्य-राजमल बोरा (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
6. तुलनात्मक साहित्य-एन.ई.विश्वनाथ अय्यर (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)
7. मराठी साहित्यः परिदृष्य-चंद्रकांत बांदिवडेकर (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)

प्रश्नपत्र - 19 आधुनिक गद्य साहित्य **Elective Course-04**

प्रस्तावना- आधुनिक काल में गद्य साहित्य के विविध रूपों का विकास इस बात का साक्षी है कि प्रौढ मन की पूर्ण अभिव्यक्ति गद्य ही में संभव है। निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाओं के रूप में गद्य साहित्य का विकास तेजी से हुआ है। मनुष्य को उसकी प्रकृति, परिवेश, परिस्थिति तथा चिंतन की विकास-प्रक्रिया के साथ प्रामाणिक रूप में गद्य के माध्यम से ही जाना जा सकता है। अतः इसका अध्ययन अनिवार्य है।

1. 'धार'-संजीव (प्रकाशक-राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. अशोक के फूल-आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (प्रकाशक-लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासः परिवेश और प्रवृत्तियाँ।

आँचलिक उपन्यासः उद्भव और विकास तथा विशेषताएँ।

समकालीन हिंदी उपन्यास और नारी-विमर्श।

ईकाई-2 हिंदी निबंधः उद्भव और विकास।

द्विवेदीजी का निबंध साहित्य तथा वर्गीकरण।

ईकाई-3 धार

संजीवः साहित्यिक परिचय।

'धार': कथ्य-योजना।

'धार': केन्द्रीय विषय।

'धार' के पात्र-मैना,मंगर,फोकल आदि।

आँचलिकता और 'धार'।

'धार' में नारी संहिता के प्रति आधुनिक स्त्री का विद्रोह।

'धार': कथा-शिल्प और भाषा।

ईकाई-4 अशोक के फूल

'अशोक के फूल' के आधार पर द्विवेदी जी के निबंधों की विशेषताएँ।

ललित निबंध के रूप में किसी एक निबंध विश्लेषण।

किसी निर्धारित निबंध के प्रतिपाद्य पर केन्द्रित प्रश्न।

द्विवेदीजी की निबंध-शैलीः 'अशोक के फूल' के आधार पर।

अंक विभाजनः

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)

सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)

सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. हिंदी के आँचलिक उपन्यास-संपा.डॉ.रामदरश मिश्र (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
2. दूसरी परंपरा की खोज-डॉ.नामवर सिंह (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
3. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार-डॉ.द्वारिका प्रसाद सक्सेना (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
4. हिंदी उपन्यास-एक अंतर्यात्रा-डॉ.रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
5. व्योमकेश दरवेश-विश्वनाथ त्रिपाठी (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
6. दसवें दशक के हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक सौहार्द-मंजुला राणा,वाणी प्रकाश, नईदिल्ली
7. समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष-डॉ.अर्जुन चौहाण
8. कहा-सुनी-दूधनाथ सिंह
9. हिन्दी उपन्यास का विकास-मधुरेश
10. हिन्दी उपन्यास : समकालीन परिदृश्य - सं. डा. महीप सिंह
11. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सं. डा. नरेन्द्र मोहन
12. साठोत्तर हिन्दी साहित्य का परिप्रेक्ष्य -सं. हिन्दी-विभाग, पुणे विधापीठ, पुणे।

अथवा

प्रश्नपत्र - 19 हिंदी उपन्यास Elective Course-04

प्रस्तावना- हिंदी गद्य विधाओं में उपन्यास सबसे अधिक विकसित व लोकप्रिय है। आज तो उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है। अतः इस विधा का गहन अध्ययन अनिवार्य है।

1. पचपन खंभे लाल दीवारें-उषा प्रियंवदा (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. तमस-भीष्म साहनी (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासः विकास रेखा।

ईकाई-2 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासः प्रकार।

आधुनिकता-बोध और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास -व्यक्ति-केन्द्री उपन्यासों के संदर्भ में।

ईकाई-3 पचपन खंभे लाल दीवारें-उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा : साहित्यिक परिचय।

'पचपन खंभे लाल दीवारें': कथानक-योजना।

'पचपन खंभे लाल दीवारें': पात्र, संवाद, वातावरण, भाषा, उद्देश्य और शीर्षक।

'पचपन खंभे लाल दीवारें' का शैली-विधान।

ईकाई-4 तमस-भीष्म साहनी (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)

भीष्म साहनीः परिचय

'तमस' में अभिव्यक्त भारत विभाजन की त्रासदी

'तमस': पात्र-योजना।

'तमस': वातावरण, भाषा-शैली,शीर्षक-योजना और उद्देश्य।

अंक विभाजनः

ईकाई 3 और 4 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
सभी ईकाईयों से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ पुस्तकें-

1. आज का हिंदी उपन्यास-डॉ.इंद्रनाथ मदान (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
2. हिंदी उपन्यास-एक अंतर्यात्रा-डॉ.रामदरश मिश्र (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
3. हिंदी उपन्यास-डॉ.सुषमा धवन (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
4. हिंदी उपन्यास की प्रवृतियाँ-डॉ.शशिभूषण सिहल (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
5. हिंदी उपन्यासः उपलब्धियाँ-डॉ.लक्ष्मीसागर वाष्णेय (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
6. आधुनिकता और हिंदी उपन्यास-डॉ.इन्द्रनाथ मदान (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)
7. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास-डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
8. स्वतंत्रता परवर्ती हिंदी उपन्यास-डॉ.प्रेमकुमार (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
9. द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.लक्ष्मीसागर वाष्णेय
10. कहानीकार निर्मल वर्मा और मधुरायःतुलनात्मक अध्ययन-डॉ.मधुकर पाडवी (ज्ञान प्रकाशन, कानपुर)
11. भीष्म साहनीःव्यक्ति और रचना-राजेश्वर सक्सेना

प्रश्नपत्र - 20 पत्रकारिता प्रशिक्षण **Multi Disciplinary Course-04**

पत्रकारिता आज जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। अतः इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन गई है।

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

ईकाई-1 विश्व पत्रकारिता का उदय।
भारत में पत्रकारिता का प्रारंभ।
प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

ईकाई-2 समाचारपत्रों के विभिन्न स्तंभों की योजना।
दृश्य-सामग्री (कार्टून, रेखाचित्र, गैफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता।
समाचार के विभिन्न स्रोत।
संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवम् कार्य-पद्धति।
पत्रकारिता से संबंधित लेखन-संपादकीय, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन (फॉलोअप) आदि की प्रविधि।

ईकाई-3 इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता-रेडियो, टी.वी., वीडियो, केबल, मल्टी मीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।
प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रणकला, प्रूफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ सज्जा।
पत्रकारिता का प्रबंधन-प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था।

ईकाई-4 मुक्त प्रेस की अवधारणा। लोक-संपर्क तथा विज्ञापन।
प्रसारभारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी।

अंक विभाजन-

ईकाई 1 और 2 से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न (13×2=26 अंक)
ईकाई 3 और 4 से टिप्पणियाँ (चार विकल्प से दो) (7×2=14 अंक)
सभी ईकाईयों से संक्षिप्त प्रश्न (दस विकल्प में से पाँच) (5×2=10 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1.हिंदी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास-अर्जुन तिवारी (वाणी प्रकाशन)
2. हिंदी पत्रकारिता:स्वरूप और संदर्भ-विनोद गोदरे(वाणी प्रकाशन)
3. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-पी.के.आर्य (प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली)
4. फीचर लेखन:स्वरूप और शिल्प-डॉ.मनोहर प्रभाकर(राधाकृष्ण प्रकाशन)
5. समाचार संपादन-कमल दीक्षित, महेश दर्पण (राधाकृष्ण प्रकाशन)
6. मीडिया-लेखन-डॉ.चंद्रप्रकाश मिश्र (संजय प्रकाशन, दिल्ली)
7. दूरदर्शन की भूमिका-सुधीश पचौरी
8. जनसंचार-विविध आयाम-ब्रजमोहन गुप्त
9. मीडिया और साहित्य-सुधीश पचौरी
10. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन
11. पत्रकारिता:विविध विधाएँ-डॉ.राजकुमारी रानी (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
12. पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ-डॉ.भोलानाथ तिवारी
13. संपादन कला एवम् प्रूफ पठन-डॉ.हरिमोहन
14. आधुनिक विज्ञापन और जन संपर्क-डॉ.तारेश भाटिया
15. ब्रेक के बाद-सुधीश पचौरी
16. पत्रकारिता: मिशन से मीडिया तक-अखिलेश मिश्र (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
17. समाचार पत्र प्रबंधन-डॉ.गुलाब कोठारी (राधाकृष्ण प्रकाशन)
18. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास-जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली)
19. भारतीय इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-देवव्रत सिंह (प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली)
20.जनसंपर्क प्रबंधन-श्रीमती कुमुद शर्मा (प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली)
21. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक-हर्षदेव (वाणी प्रकाशन)

++++++

M.A. DEGREE COURSE HINDI

4TH SEMESTER

Sr. I	Name of Course	Total Marks Ext / Internal	Parsing Standard	Total Teaching Hours	Weekly Teaching Hours	Credits
1	PAPER -16 हिंदी भाषा Core Course-10	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
2	PAPER -17 हिंदी साहित्य का इतिहास Core Course-11	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
3	PAPER -18 भारतीय साहित्य Core Course-12	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
4	PAPER- 19 आधुनिक गद्य साहित्य Elective Course-4	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
5	PAPER- 19 हिंदी उपन्यास Elective Course-4	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
6	PAPER- 20 पत्रकारिता प्रशिक्षण Multi Disciplinary Course-4	50+20=70	28+12=40	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	04
7	Self Studies, Seminar, Assignments & Tutorials Self Study Course-4	-	-	15 Weeks × 4 = 60 Hrs	4 Hrs	02
8					Total Credits	22

Model Of Time-Table

Session	1	2	3	4	5
Monday	Class -room teaching of five course in each Semester. Four Hours for each course per week Total teaching hours per week=20				Each Day 5th Hour can be used for seminar/presentation ect.
Tuesday					
Wednes					
Thursday					
Friday					
Saturday	Self Study Course				